उपसंहार

❊ उपसंहार ❊

"शिवप्रसाद सिंह की कहानियों में चित्रित स्वाधीन भारतीय समाज" के अध्ययन करने के पश्चात निष्कर्ष के रूप में जो तथ्य सामने आए हैं उनका निचोड यहाँ प्रस्तुत है।

शिवप्रसाद सिंह : व्यक्ति एवं कृति परिचय :-

शिवप्रसाद सिंह के व्यक्तित्व एवं कृतित्व के अध्ययन के पश्चात मैं इस निष्कर्ष तक पहुँच चुका हूँ कि शिवप्रसाद सिंह का व्यक्तित्व गंभीर, धीरोदात्त और आकर्षक था। उनके व्यक्तित्व पर मानवता धर्म की छाप रही। माता-पिता के साथ-साथ दादी माँ का प्यार मिलने के कारण उनका बचपन सुख-चैन के साथ बीता लेकिन उनकी शादी के पश्चात संयुक्त परिवार टूटा और सिंहजी को आर्थिक विपन्नताओं का सामना करना पडा। सत्य के पुजारी शिवप्रसादजी को समयपर नौकरी मिली और आर्थिक विपन्नता खत्म हो गयी। पहलवानी काया के शिवप्रसाद सिंह एक प्रतिभासंपन्न साहित्यकार थे। मेधावी छात्र, एक अच्छे मित्र और उच्च कोटि की प्रतिभावान जैसी अनेक विशेषताएँ उनके व्यक्तित्व में दृष्टिगोचर होती हैं। उनकी एकमात्र बेटी मंजु की मृत्यु से उन्हें गहरी चोट पहुँची। मानव धर्म के प्रसार एवं प्रचार हेतु ही उन्होंने अपना साहित्य लिखा है। अपनी दादी माँ से प्रेरणा लेकर उन्होंने साहित्यक्षेत्र में अपना पहला कदम रखा।

उन्होंने कहानी, उपन्यास, नाटक, निबंध, समीक्षा, रिपोर्ताज, अनुवाद और जीवनी जैसी अनेक विधाओं में लेखन किया है। अत: वे बहुमुखी प्रतिभा के रचनाकार सिद्ध होते हैं। मानवता धर्म के सच्चे पुजारी सत्तरवर्षीय शिवप्रसाद सिंह असमय ही प्रकृति में समा गए।

स्वाधीन भारतीय समाज और विवेच्य कहानी साहित्य :-

स्वाधीन भारतीय समाज के सिंहावलोकन से यह स्पष्ट है कि समाज और जीवन के हर क्षेत्र में विघटन हुआ है। जीवन, जागरुकता और सामाजिकता जैसे आवश्यक तत्वों को समाज भूल रहा है। सामाजिक संबंधों का जाल सदैव परिवर्तित रहा है। स्वाधीन भारतीय समाज अर्थात आज के समाज एवं व्यक्ति के जीवन में अंतर्विरोध नजर आता है। एक ओर आध्यात्मिकता की विरासत का गर्व है, तो दूसरी ओर भौतिकवादी और अनैतिक आचार-विचारों का बोलबाला है। आज भी भारतीय समाज में जाति-पाँति की समस्या पायी जाती है। किंतु सर्वाधिक उल्लेखनीय पहलू यह है कि चाहे जातिगत ऊँच-नीच की भावना अभी बनी हुई है किंतु अस्पृश्यता का विकराल स्वरुप अब लगभग समाप्त हो गया है। समाज में स्थित राजनैतिक स्थिति आज चिंता का विषय बनकर हमारे सामने खडी है। नयी पीढी में राष्ट्रीय आंदोलन के मूल्यों के प्रति लगाव नहीं रहा। त्याग और बलिदान की भावना के स्थानपर आज स्वार्थपरता एवं पदलोलुपता की भावना स्थापित हुई है। स्वाधीन भारत की आर्थिक, सांस्कृतिक, धार्मिक एवं साहित्यिक स्थितियों में बदलाव आया है। वर्तमान युग में मानव यंत्र का अविभाज्य घटक बनकर रहा है। भौतिक सुख-सुविधाओं के पीछे मानव लगातार दौड रहा है। अत: शिवप्रसाद सिंह ने सामाजिक, राजनैतिक, आर्थिक, सांस्कृतिक, धार्मिक तथा साहित्यिक विषय से संबंधित लिखी कहानियाँ स्वाधीन भारत का सही चित्र हमारे सामने रखती हैं। स्वाधीन भारतीय समाज में स्थित स्वार्थलोलुपता पर शिवप्रसाद सिंह ने तीखा प्रहार किया है। मनुष्यता या मानवता का नाम लेकर अपना स्वार्थ साधनेवाले लोगों का परदाफाश करने में विवेच्य कहानियाँ सक्षम हैं।

विवेच्य कहानियों में चित्रित स्वाधीन भारत का ग्रामीण समाज :-

विवेच्य कहानियों में चित्रित स्वाधीन भारत के ग्रामीण समाज का अध्ययन करने के पश्चात हम इस निष्कर्ष तक पहुँचते हैं कि स्वाधीन भारत के ग्रामीण समाज के सामाजिक, आर्थिक, धार्मिक, राजनैतिक तथा सांस्कृतिक जीवन पर परिवर्तित मानसिकता और बदलती परिस्थितियों का प्रभाव है। पश्चिमी सभ्यता का प्रभाव और उसकी छाया शहरों के माध्यम से गावों में जा रही है। विवेच्य कहानियों में चित्रित ग्रामीण समाज अभावग्रस्त जीवन-जीने के लिए अभिशप्त है। भ्रष्टाचार और साम्प्रदायिकता इस समाज में सर्वत्र प्राप्त है। ग्रामीण समाज नारी की दयनीय स्थिति, जाति-पाति, छुआछुत और शोषण जैसी अनेक समस्याओं से ओतप्रोत है। सामाजिक जीवन में अर्थ ही सब कुछ है। अर्थाभाव के कारण व्यक्ति और समाज का विकास नहीं होता। दयनीय आर्थिक परिस्थिति के कारण अनेक समस्याओं के साथ जूझते-जूझते लोगों का जीवन नरकप्राय बना है। विवेच्य कहानियों में इस नरकप्राय जीवन का यथार्थ चित्रण प्रस्तुत है। ग्रामीण समाज की रुढि एवं परंपराओं की जर्जरता और अंधविश्वासों के खोखलेपन को यथार्थ रुप में इन कहानियों में प्रस्तुत किया है। विवेच्य कहानियों में शिवप्रसाद सिंह ने ग्राम-संस्कृति का सजीव चित्रण किया है। ग्रामीण जीवन में मनाये जानेवाले उत्सव, त्यौहार, गाये जानेवाले लोकगीत, मेले, दंगल आदि का विस्तार के साथ विवेचन किया है। विवेच्य कहानियों में संस्कृति एक सामाजिक विरासत के रुप में दृष्टिगोचर होती है। शिवप्रसाद सिंह ने भारतीय समाज व्यवस्था की विसंगतियों को नजदीक से देखा था। उनका समूचा कहानी लेखन एक ऐसे सामाजिक परिवर्तन की माँग करता है, जिसमें बिना किसी भेद-भाव के मनुषय को उसके कर्मों और गुणों के आधार पर ऊँचा स्थान प्राप्त हो।

विवेच्य कहानियों में चित्रित स्वाधीन भारत की समस्याएँ :-

हिंदी कहानी विधा में शिवप्रसाद सिंह ने मानवता धर्म को अपनाया है। उनकी कहानियाँ जीवन के अनेक चित्र पाठक के मन पर समुचित प्रभाव की सृष्टि करने में समर्थ हैं। उनके प्रत्येक कहानी की विषय वस्तु अलग है। दूसरी बात यह है कि उनकी प्रत्येक कहानी में एक विशिष्ट समस्या दिखाई देती है। इन कहानियों में चित्रित समस्याओं का अध्ययन करने से यह स्पष्ट होता है कि उनकी कहानियों में निम्नवर्ग, पासी, नट, मुसहर, डोम या दूसरी दलित जाति की समस्याओं का पर्याप्त चित्रण हुआ है। उच्च वर्ग की समस्याओं का चित्रण उनकी कहानियों में नहीं मिलता। उन्होंने अपनी कहानियों में सामाजिक, राजनीतिक, आर्थिक, धार्मिक एवं शैक्षिक समस्याओं का भी चित्रण किया है। शिवप्रसाद सिंह की कहानियों में गाँव अपनी पूरी विविधता के साथ प्रस्तुत हुआ है। उनकी कहानियाँ एक शहरी संवेदना जगाती हैं। सामाजिक समस्या के अंतर्गत नारी, बेकारी, जाति-पाति, निम्नवर्ग तथा शोषण जैसी कई समस्याएँ चित्रित हैं। राजनैतिक समस्या के अंतर्गत राजनेताओं की मनमानी, राजनैतिक भ्रष्टाचार, राजनीति से सामान्य लोगों का सरोकार, राजनीति में धन का प्राबल्य आदि का चित्रण किया है। आर्थिक समस्या के अंतर्गत बेकारी, आर्थिक अभाव के कारण लाचार जीवन, किसान तथा मजदूरों का अभावग्रस्त जीवन आदि का चित्रण किया है। धार्मिक समस्या के अंतर्गत धर्मसंबंधी धारणा, अंधविश्वास और बाह्याडंबर आदि का चित्रण किया है। शिवप्रसाद सिंह ने परंपरागत रुढियों का विरोध किया है और अंधविश्वासों को छोड देने का आग्रह किया है। किसी भी मूल्य या विश्वास की कसौटी मनुष्यता है, यही विचार विवेच्य कहानियों द्वारा सिंहजी ने स्थापित करने का सफल प्रयास किया है।

विवेच्य कहानियों की विशेषताएँ :-

शिवप्रसाद सिंह की बहुत-सी कहानियाँ मैं शैली यानी प्रथम पुरुष में लिखी गयी हैं। अपनी कहानियों में उन्होंने परिवर्तनशील ग्राम-जीवन को ही प्रधानता दी है। विवेच्य कहानियों में चरित्र प्रधानता, संवेदनशीलता, अंधविश्वास एवं रुढि-परंपरा, आदर्श मानवी मूल्य, यथार्थ का चित्रण, काव्यात्मकता, सामाजिक आदर्श, संघर्ष और भाषागत विशिष्टता, आदि विशेषताएँ दृष्टिगोचर होती हैं। उनकी कहानियों का संसार जीवन के यथार्थ से उपजा सहज सवालों से भरा संसार है। उनके कहानी साहित्य का अध्ययन करने के पश्चात पता चलता है कि शिवप्रसाद सिंह के अंदर एक कवि हमेशा से मौजूद रहा है। इसी कारण उनकी कहानियों में कही-कहीं काव्यात्मकता दृष्टिगोचर होती है और उनका संवेदनात्मक पक्ष सशक्त परिलक्षित होता है। इन कहानियों में अनुभूतिजन्य सच्चाई और गहराई दिखाई देती है। विवेच्य कहानियों में आधुनिकता बोध का सम्यक विस्फोट चित्रित हुआ है।

उपलब्धियाँ :-

१. शिवप्रसाद सिंह के कहानी-साहित्य में चित्रित समाज स्वाधीन भारत का संपूर्ण प्रतिनिधी समाज है।

२. शिवप्रसाद सिंह की कहानियों में मुख्यत: स्वाधीन भारत के ग्रामीण समाज का चित्रण उपलब्ध है। स्वाधीन भारत के शहरी समाज का चित्रण लगभग नहीं के बराबर है। शिवप्रसाद सिंह की कहानियों का अध्ययन करनेवाला हर समझदार पाठक स्वाधीन भारत के ग्रामीण समाज का विविध कोणों से

अध्ययन कर ग्रामीण समाज में स्थित समस्याओं को हल करने के सारे उपाय पा सकता है। शिवप्रसाद सिंह के कहानी-साहित्य को यह महत्त्वपूर्ण उपलब्धि है।

३. विवेच्य कहानियों में प्रतिबिंबित समस्याएँ प्राय: वर्तमान कालीन संपूर्ण भारत वर्ष की ही समस्याएँ हैं।

४. शिवप्रसाद सिंह की कहानियों में मानवता धर्म का जो चित्रण प्राप्त है वह वर्तमान युग की अनिवार्य आवश्यकता है।

५. भारत की अधिकांश आबादी के गाँवों में बसी हुई होने के कारण भारत को देहातों में बसा देश कहता गलत नहीं होगा। शिवप्रसाद मुख्यत: ग्रामीण जीवन के चितेरा हैं। अत: उनकी कहानियों में जो ग्रामीण जीवन का चित्रण मिलता है वस्तुत: उसे स्वाधीन भारत का चित्रण समझना एकांगी नहीं तो युक्तियुक्त ही होगा।

अध्ययन की नई दिशाएँ :-

शिवप्रसाद सिंह के साहित्य पर निम्नांकित विषयों पर स्वतंत्र रूप से अनुसंधान किया जा सकता है -

१. शिवप्रसाद सिंह के कथा साहित्य में चित्रित स्वाधीन भारतीय समाज

२. शिवप्रसाद सिंह के कथा साहित्य का प्रवृत्तिमूलक अनुशीलन

३. शिवप्रसाद सिंह के निबंधों में प्रतिबिंबित विचार एवं शिल्प

उपर्युक्त विषय मुझे अध्ययन के दौरान प्राप्त हुए हैं जिनपर स्वतंत्र रूप से अनुसंधान हो सकता है। वस्तुत: हर शोध विषय की अपनी सीमा होती है। यहाँ मेरे अपने शोध विषय की भी सीमा है। शायद भविष्य में आनेवाले शोधार्थी इन विषयों पर शोधकार्य संपन्न करें।

❑❑❑